955. तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः 5|4|86.
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है - यदि संख्यावाची अथवा अव्ययवाचक शब्दों के परे 'अंगुली' शब्द आता हो तो उस तत्पुरुष समास के परे 'अच्' (स्वरादि) प्रत्यय होता है।

यथा - द्व्यङ्गुलम् - लौ० वि० द्वे अंगुली प्रमाणमस्य (प्रमाणम्+अस्य), अ० वि० - द्वि + औ० + अंगुलि + औ।

'तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च' सूत्रानुसार संख्यावाची द्वि का अंगुलि पद के साथ समास हुआ। 'कृत्..' से प्राति० 'सुपो..' से विभक्ति का लोप द्वि + अंगुलि, 'प्रथमा निर्दिष्टं' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं..' से पूर्वनिपात-। संख्यापूर्वो द्विगुः' से द्विगु संज्ञा, 'प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः' से 'मात्रच्' प्रत्यय 'द्विगोर्नित्यम्' से 'मात्रच्' का लोप, 'इको यणचि' (इक् - यण्) इ का य होकर 'द्व्यङ्गुलि+अ, 'यस्येति च' से इकार का लोप होकर द्व्यङ्गुल बना, स्वादि कार्य तथा 'अतोऽम्' सु का अम् आदेश होकर 'द्व्यङ्गुलम्' रूप सिद्ध हुआ।

(b) निरङ्गुलम् - लौ० वि० - निर्गतमङ्गुलिभ्यः, अ० वि० - निर् + अंगुलि + भ्यस्। Same as द्व्यङ्गुलम्।

956. अहः सर्वैकदेश संख्यात पुण्याच्च रात्रेः 5|4|87।

यह विधिसूत्र है। यदि अहन्, सर्व, एकदेश, संख्यात और पुण्य इन शब्दों के परे रात्रि शब्द आता है तो उसके परे 'अच्' प्रत्यय होता है, और उसका ग्रहण द्वन्द्व समास में भी होता है।

957 रात्राह्नाऽहाः पुंसि - 2|4|29
यह विधिसूत्र है। यह सूत्र पूर्वसूत्र से होने वाले नपुंसक

लिंग का बाध करता है। सूत्र का अर्थ है - रात्रि, अह्न तथा अह ये जिसके अन्त में आते हैं, वे द्वन्द्व, तत्पुरुष समास पुल्लिंग में ही हों।

यथा - अहोरात्रः - लौ० वि० - 'अहश्च रात्रिश्च',

अ० वि० - अहन् + सु, रात्रि + सु।

'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से समास, प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति लोप, 'जातिरप्राणिनाम्' से एकवद्भाव होने पर 'न्' का 'उ' आदेश तथा 'इकार' का लोप होने पर अहोरात्र शब्द को 'स नपुंसकम्' से प्राप्त नपुंसक लिंग का 'रात्राह्नाहाः पुंसि' सूत्र से बाध होकर पुं० में सु - रुं - ः आदि कार्य होकर अहोरात्रः रूप सिद्ध हुआ।

(b) सर्वरात्रः - लौ० वि० - सर्वा रात्रिः, अ० वि० - सर्वा + सु, रात्रि + सु।

(c) संख्यातरात्रः लौ० वि० संख्याता रात्रिः, अ० वि० - संख्यात + सु रात्रि + सु।

(d) पुण्यरात्रः Same as अहोरात्रः।

वा० संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम् - संख्यावाची पद पूर्व में हो तो रात्रि शब्द नपुंसक लिंग में होता है। यथा -

द्विरात्रम् - द्वयोः रात्र्योः समाहारः, अ० वि० - द्वि + ओस्, रात्रि + ओस्। Same as अहोरात्रः —

नपुंसक लिं० में करने के लिए 'संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम्' वार्तिक से प्राप्त हुए पुल्लिंग का बाध होकर नपुंसक लिंग में सु का अम् आदेश हुआ एवं 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होने पर 'द्विरात्रम्' रूप सिद्ध हुआ।

(5) त्रिरात्रम् - Same as द्विरात्रम्

B.A. I st Yr.
Uma Pandey
Skt. Deptt.

Scanned with CamScanner